[२२] श्री पुष्पचूलिका (उपांग)सूत्रम्

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

“पुष्पचूलिका” मूलं एवं वृत्ति:

[मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्ति:]

[आद्य संपादक: - पूज्य अनुयोगाचार्य श्री दानविजयजी गणि म॰ सा॰]

(किञ्चित् वैशिष्ट्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर **(M.Com., M.Ed., Ph.D.)**

15/01/2015, गुरुवार, २०७१ पौष कृष्ण १०

jain_e_library's Net Publications

आगम (२२)	“पुष्पचूलिका” - उपांगसूत्र-११ (मूलं+वृत्ति:) अध्ययनं [–] ---------- मूलं [–]
प्रत सूत्रांक [–] दीप अनुक्रम [–]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [२२], उपांग सूत्र - [११] “पुष्पचूलिका” मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्ति:
	पुष्पचूलिका-उपाङ्गसूत्रस्य मूल “टाइटल पेज”

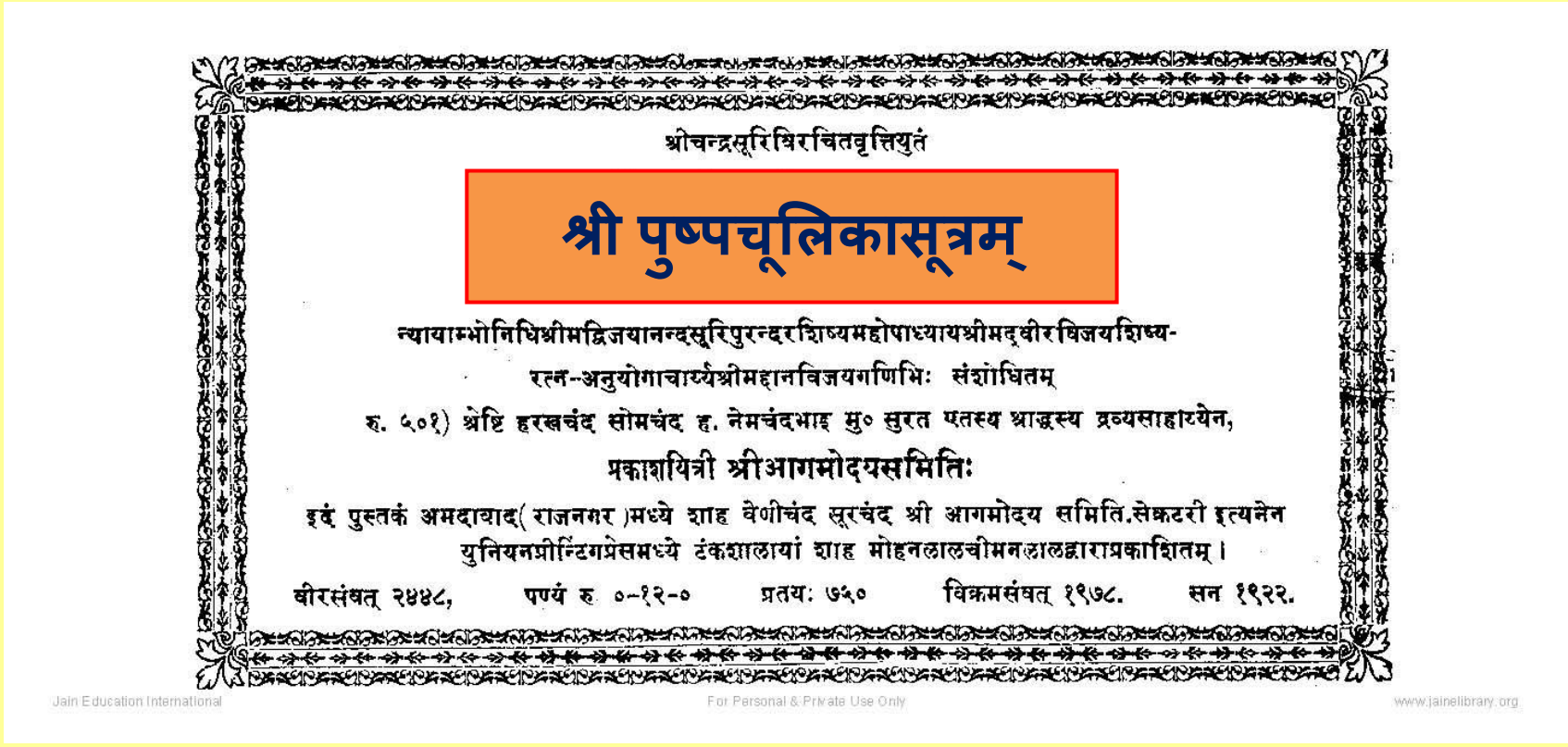

श्रीचन्द्रसूरिविरचितवृत्तियुतं

श्री पुष्पचूलिकासूत्रम्

न्यायाम्भोनिधिश्रीमद्विजयानन्दसूरिपुरन्दरशिष्यमहोपाध्यायश्रीमद्वीरविजयशिष्य-
रत्न-अनुयोगाचार्य्यश्रीमद्दानविजयगणिभिः संशोधितम्

रु. ५०१) श्रेष्टि हरखचंद सोमचंद ह. नेमचंदभाइ मु० सुरत एतस्य श्राद्धस्य द्रव्यसाहाय्येन,

प्रकाशयित्री श्रीआगमोदयसमितिः

इदं पुस्तकं अमदावाद(राजनगर)मध्ये शाह वेणीचंद सूरचंद श्री आगमोदय समिति.सेक्रटरी इत्यनेन
युनियनप्रीन्टिंगप्रेसमध्ये टंकशालायां शाह मोहनलालचीमनलालद्वाराप्रकाशितम् ।

वीरसंवत् २४४८, पण्यं रु ०-१२-० प्रतयः ७५० विक्रमसंवत् १९७८. सन १९२२.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:		मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:		मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:
०१-०३	[१-१०] भूता/(श्री) आदि दश	००४		-----	----------	-----		-----	----------	-----

['पुष्पचूलिका' - मूलं एवं वृत्तिः] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

यह प्रत सबसे पहले "निरयावलिका" के नामसे सन १९२ २ (विक्रम संवत १९७ ८) में आगमोदय समिति द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्य अनुयोगाचार्य दानविजयजीगणि महाराज साहेब | इसमे 'निरयावलिका,कल्पवतंसिका,पुष्पिता,पुष्पचुलिका,वृष्णिदशा' पांच उपांग थे.

इसी प्रत को फिर से दुसरे पूज्यश्रीओने अपने-अपने नामसे भी छपवाई, जिसमे उन्होंने खुदने तो कुछ नहीं किया, मगर इसी प्रत को ऑफसेट करवा के, अपना एवं अपनी प्रकाशन संस्था का नाम छाप दिया. जिसमे किसीने पूज्यपाद् सागरानंदसूरिजी के नाम को आगे रखा, और अपनी वफादारी दिखाई, तो किसीने स्वयं को ही इस पुरे कार्य का कर्ता बता दिया और संपादकपूज्यश्री तथा प्रकाशक का नाम ही मिटा दिया |

✣ **हमारा ये प्रयास क्यों?** ✣ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, **४५-आगम सटीक** भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की *[पूर्वाचार्य]* पूज्य श्री के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक **स्पेशियल फोरमेट** बनवाया, जिसमे बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर **शीर्षस्थानमे** आगम का नाम, फिर अध्ययन और मूलसूत्र के क्रमांक लिख दिए, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन एवं सूत्र चल रहे है उसका सरलता से ज्ञान हो शके, बायीं तरफ **आगम** का **क्रम** और इसी **प्रत** का **सूत्रक्रम** दिया है, उसके साथ वहाँ **'दीप अनुक्रम'** भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके | हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रो के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ **कौंस [-]** दिए है और जहां गाथा है वहाँ **||-||** ऐसी **दो लाइन** खींची है या फिर गाथा शब्द लिख दिया है |

हमने एक अनुक्रमणिका भी बनायी है, जिसमे प्रत्येक अध्ययन आदि लिख दिये है और साथमें इस सम्पादन के पृष्ठांक भी दे दिए है, जिससे अभ्यासक व्यक्ति अपने चहिते अध्ययन या विषय तक आसानी से पहुँच शकता है | अनेक पृष्ठ के नीचे **विशिष्ठ फूटनोट** भी लिखी है, जहां उस पृष्ठ पर चल रहे ख़ास विषयवस्तु की, मूल प्रतमें रही हुई कोई-कोई मुद्रण-भूल की या क्रमांकन-भूल सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होती है |

अभी तो ये jain_e_library.org का 'इंटरनेट पब्लिकेशन' है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीं सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर ईसि को मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है|

.....मुनि दीपरत्नसागर.....

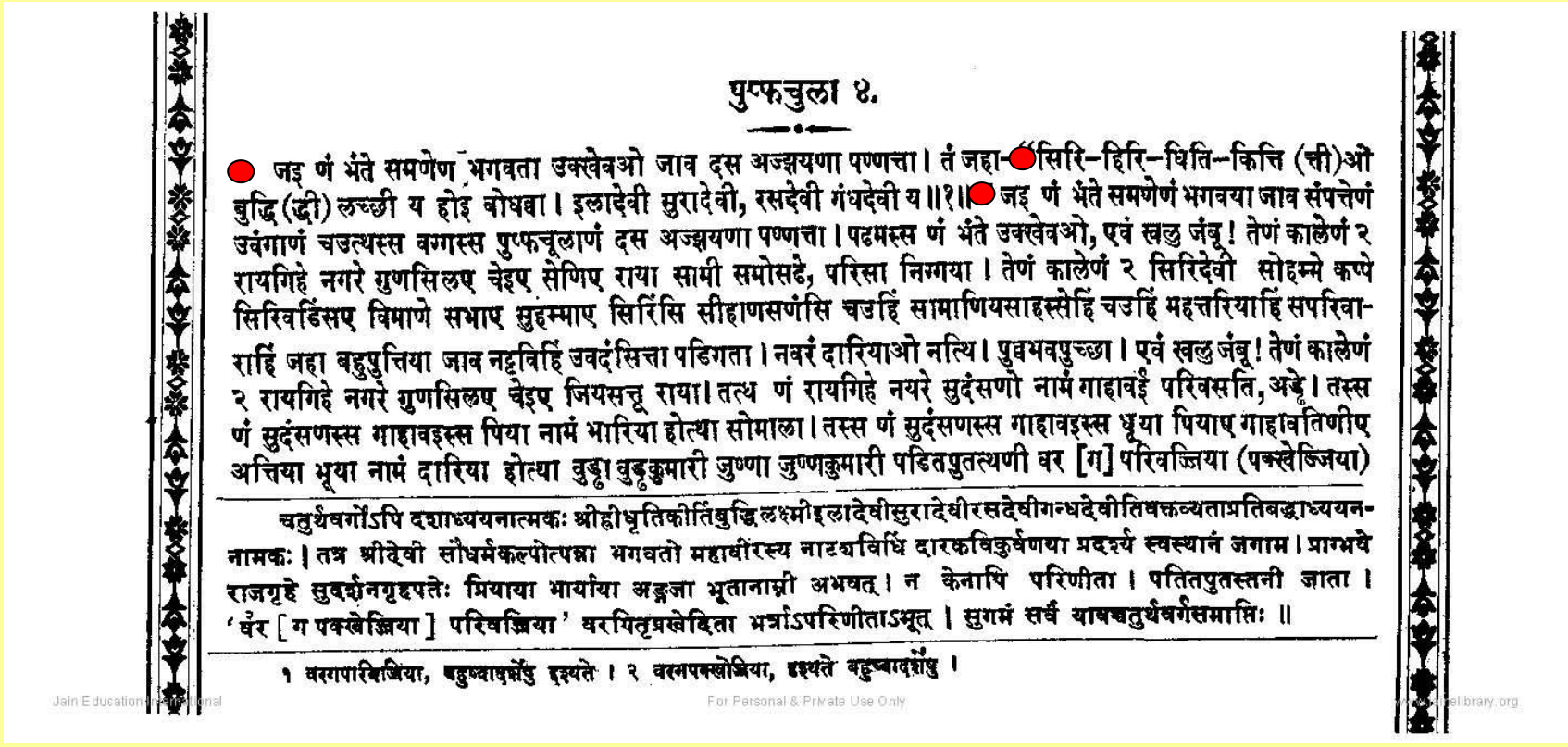

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [–]

पुप्फचुला ४.

● जइ णं भंते समणेण भगवता उक्खेवओ जाव दस अज्झयणा पण्णत्ता। तं जहा-●"सिरि-हिरि-धिति-कित्ति (त्ती)ओ बुद्धि (द्धी) लच्छी य होइ बोधवा। इलादेवी सुरादेवी, रसदेवी गंधदेवी य ॥१॥● जइ णं भंते समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवंगाणं चउत्थस्स वग्गस्स पुप्फचूलाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता। पढमस्स णं भंते उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया सामी समोसढे, परिसा निग्गया। तेणं कालेणं २ सिरिदेवी सोहम्मे कप्पे सिरिवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सिरिंसि सीहाणसणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं सपरिवाराहिं जहा बहुपुत्तिया जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगता। नवरं दारियाओ नत्थि। पुवभवपुच्छा। एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए जियसत्तू राया। तत्थ णं रायगिहे नयरे सुदंसणो नामं गाहावई परिवसति, अड्ढे। तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स पिया नामं भारिया होत्था सोमाला। तस्स णं सुदंसणस्स गाहावइस्स धूया पियाए गाहावतिणीए अत्तिया भूया नामं दारिया होत्था वुड्ढा वुड्ढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडितपुतत्थणी वर [ग] परिवज्जिया (पक्खेज्जिया)

चतुर्थवर्गोऽपि दशाध्ययनात्मकः श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्मीइलादेवीसुरादेवीरसदेवीगन्धदेवीतिवक्तव्यताप्रतिबद्धाध्ययननामकः। तत्र श्रीदेवी सौधर्मकल्पोत्पन्ना भगवतो महावीरस्य नाट्यविधिं दारकविकुर्वणया प्रदर्श्य स्वस्थानं जगाम। प्राग्भवे राजगृहे सुदर्शनगृहपतेः प्रियाया भार्याया अङ्गजा भूतानाम्नी अभवत्। न केनापि परिणीता। पतितपुतस्तनी जाता। 'वर [ग पक्खेज्जिया] परिवज्जिया' वरपितृप्रखेदिता भर्त्राऽपरिणीताऽभूत्। सुगमं सर्वं यावच्चतुर्थवर्गसमाप्तिः ॥

१ वरगपारिवज्जिया, बहुष्वादर्शेषु दृश्यते। २ वरगपक्खेज्जिया, दृश्यते बहुष्वादर्शेषु।

Jain Education International | For Personal & Private Use Only | www.jainelibrary.org

● अत्र अध्ययनानि १-१०, [मूलसूत्र- १-३] आरभ्यते

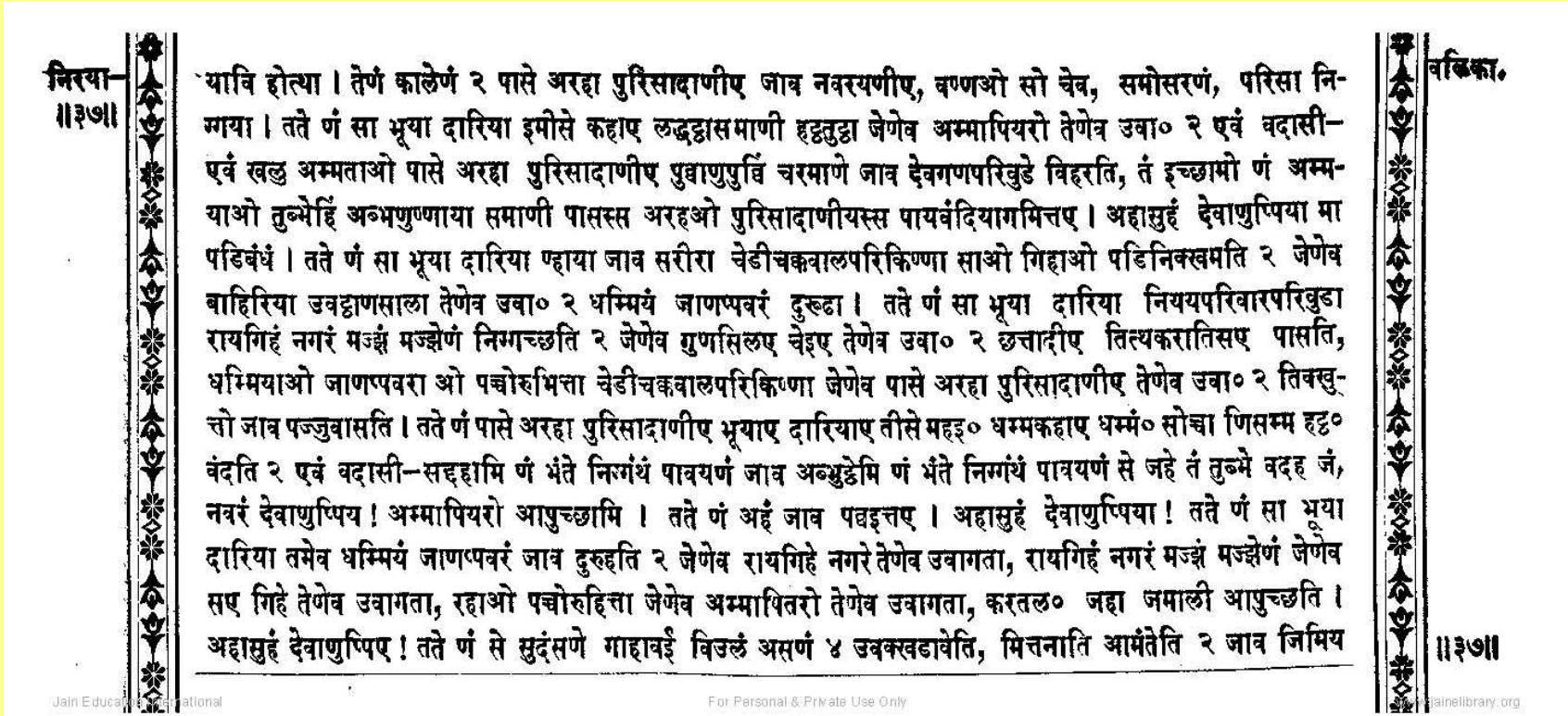

निरया- ॥३७॥

थावि होत्था। तेणं कालेणं २ पासे अरहा पुरिसादाणीए जाव नवरयणीए, वण्णओ सो चेव, समोसरणं, परिसा निग्गया। तते णं सा भूया दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठासमाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा० २ एवं वदासी–एवं खलु अम्मताओ पासे अरहा पुरिसादाणीए पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव देवगणपरिवुडे विहरति, तं इच्छामो णं अम्मयाओ तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदियागमित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया मा पडिबंधं। तते णं सा भूया दारिया ण्हाया जाव सरीरा चेडीचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमति २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवा० २ धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा। तते णं सा भूया दारिया नियगपरिवारपरिवुडा रायगिहं नगरं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छति २ जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवा० २ छत्तादीए तित्थकरातिसए पासति, धम्मियाओ जाणप्पवरा ओ पच्चोरुभित्ता चेडीचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवा० २ तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासति। तते णं पासे अरहा पुरिसादाणीए भूयाए दारियाए तीसे महइ० धम्मकहाए धम्मं० सोच्चा णिसम्म हट्ठ० वंदति २ एवं वदासी–सद्दहामि णं भंते निग्गंथं पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि णं भंते निग्गंथं पावयणं से जहे तं तुब्भे वदह जं, नवरं देवाणुप्पिय! अम्मापियरो आपुच्छामि। तते णं अहं जाव पव्वइत्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! तते णं सा भूया दारिया तमेव धम्मियं जाणप्पवरं जाव दुरुहति २ जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागता, रायगिहं नगरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागता, रहाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापितरो तेणेव उवागता, करतल० जहा जमाली आपुच्छति। अहासुहं देवाणुप्पिए! तते णं से सुदंसणे गाहावई विउलं असणं ४ उवक्खडावेति, मित्तनाति आमंतेति २ जाव जिमिय

वह्निका. ॥३७॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भुत्तुत्तरकाले सूईभूते निंक्खमणमाणित्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! भूयादारियाए पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं उवट्ठवेह २ जाव पच्चप्पिणह। तते णं ते जाव पच्चप्पिणंति। तते णं से सुदंसणे गाहावई भुयं दारियं ण्हायं जाव विभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहति २ मित्तनाति० जाव रवेणं रायगिहं नगरं मज्झं मज्झेणं जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागते, छत्ताईए तित्थयरातिसए पासति २ सीयं ठावेति २ भूयं दारियं सीयाओ पच्चोरूभेति २। तते णं तं भूयं दारियं अम्मापियरो पुरतो काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागते, तिखुत्तो वंदति नमंसति २ एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! भूया दारिया अम्हं एगा धूया इट्ठा, एस णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा भीया जाव देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयाति २ तं एयं णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणिभिक्खं दलयति, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणीभिक्खं। अहासुहं देवाणु०। तते णं सा भूता दारिया पासेणं अरहा० एवं वुत्तासमाणी हट्ठा उत्तरपुरच्छिमं सयमेव आभरणमल्लालंकारं उम्मुयइ, जहा देवाणंदा पुप्फचूलाणं अंतिए जाव गुत्तबंभयारिणी। तते णं सा भूता अज्जा अण्णदा कदाइ सरीरपाओसिया जाया यावि होत्था, अभिक्खणं २ हत्थे धोवति, पादे धोवति एवं सीसं धोवति, मुहं धोवति, थणगंतराइं धोवति, कक्खंतराइं धोवति, गुज्झंतराइं धोवति, जत्थ जत्थ वि य णं ठाणं वा सिज्जं वा निसिहियं वा चेतेति तत्थ तत्थ वि य णं पुव्वामेव पाणएणं अब्भुक्खेति। ततो पच्छा ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेतेति। तते णं तातो पुप्फचूलातो अज्जातो भूयं अज्जं एवं वदासी–अम्हे णं देवाणुप्पिए

१ उवक्खण प्र० २ बाउसियाणं प्र०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

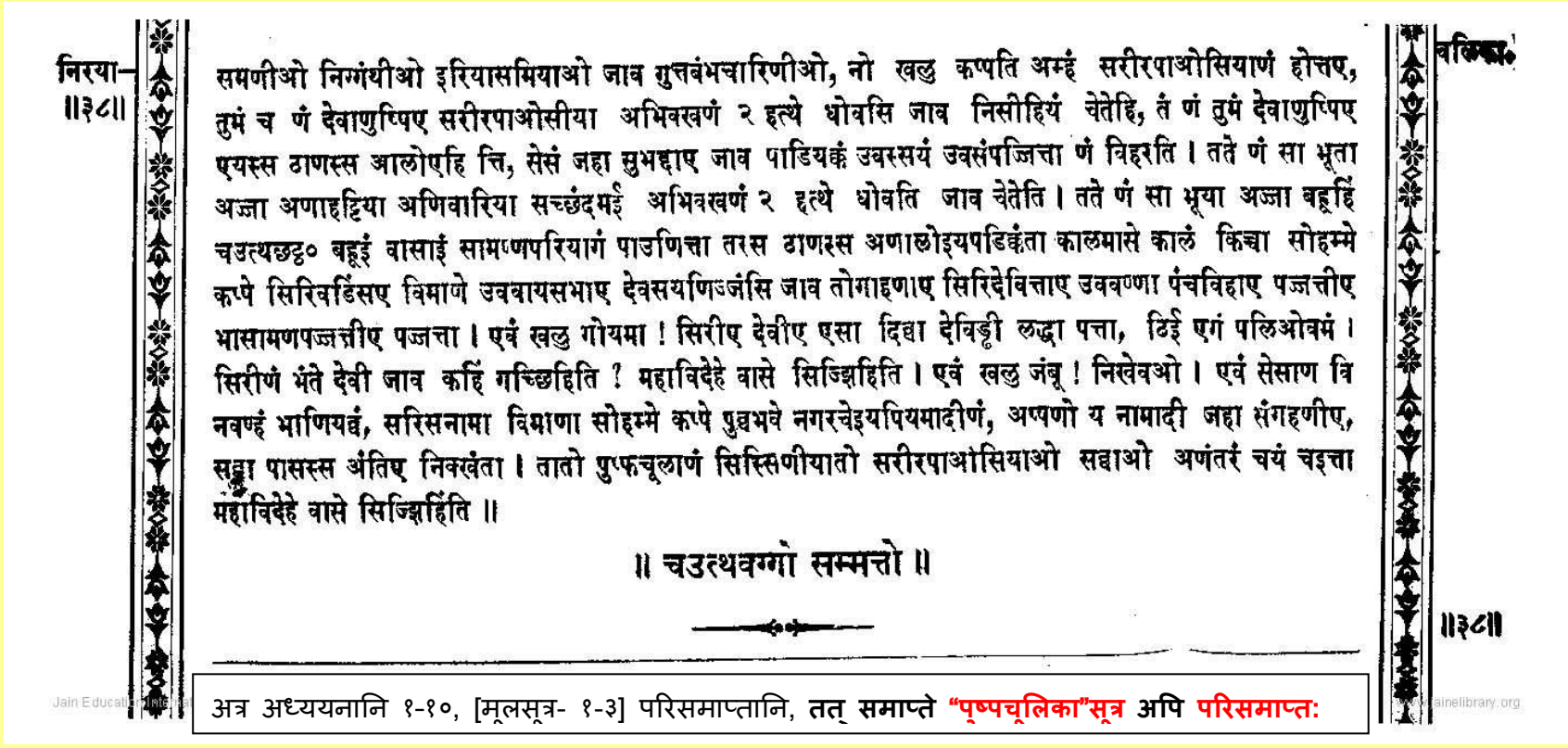

समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ, नो खलु कप्पति अम्हं सरीरपाओसियाणं होत्तए, तुमं च णं देवाणुप्पिए सरीरपाओसीया अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि जाव निसीहियं चेतेहि, तं णं तुमं देवाणुप्पिए एयस्स ठाणस्स आलोएहि त्ति, सेसं जहा सुभद्दाए जाव पाडियक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरति। तते णं सा भूता अज्जा अणाहट्टिया अणिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं २ हत्थे धोवति जाव चेतेति। तते णं सा भूया अज्जा बहूहिं चउत्थछट्ठ० बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सिरिवडिंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि जाव तोगाहणाए सिरिदेवित्ताए उववण्णा पंचविहाए पज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए पज्जत्ता। एवं खलु गोयमा! सिरीए देवीए एसा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता, ठिई एगं पलिओवमं। सिरीणं भंते देवी जाव कहिं गच्छिहिति? महाविदेहे वासे सिज्झिहिति। एवं खलु जंबू! निक्खेवओ। एवं सेसाण वि नवण्हं भाणियव्वं, सरिसनामा विमाणा सोहम्मे कप्पे पुव्वभवे नगरचेइयपियमादीणं, अप्पणो य नामादी जहा संगहणीए, सव्वा पासस्स अंतिए निक्खंता। तातो पुप्फचूलाणं सिस्सिणीयातो सरीरपाओसियाओ सव्वाओ अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति॥

॥ चउत्थवग्गो सम्मत्तो ॥

Jain Education International

अत्र अध्ययनानि १-१०, [मूलसूत्र- १-३] परिसमाप्तानि, तत् समाप्ते "पुष्पचूलिका"सूत्र अपि परिसमाप्त:

www.jainelibrary.org

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादित: (आगमसूत्र २२)
"पुष्पचूलिका" परिसमाप्त:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

22

पूज्य अनुयोगाचार्य श्रीदानविजयजी गणि संशोधित: संपादितश्च

"पुष्पचूलिकासूत्र" [मूलं एवं चन्द्रसूरि-विरचिता वृत्ति:]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

"पुष्पचूलिका" मूलं एवं वृत्ति:" नामेण

परिसमाप्त:

Remember it's a Net Publications of 'jain_e_library's'